Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

रामसेवक सोनी 'प्रकाश' के काव्य संग्रह 'ठिठुरती धूप' में विविध संदर्भ

सरोज गौतम*

***पीएच.डी. शोधार्थी (हिन्दी) शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर उत्कृष्ठ महाविद्यालय, दतिया, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत**

प्रस्तावना – रामसेवक सोनी 'प्रकाश' आधुनिक कविता के प्रमुख कवि हैं। 'रामसेवक सोनी प्रकाश' एक ऐसा नाम है जो महज साहित्यकार नहीं बल्कि एक सक्रिय सामाजिक विचारक भी थे। इनका जन्म 25 सितम्बर 1941 को डोंगरा खुर्द जिला ललितपुर (उ.प्र.) में हुआ एवं स्वर्गवास 21/04/2021 को हुआ।

आधुनिक हिन्दी कविता के विविध सन्दर्भ हमें उनकी कविताओं में प्राप्त होते हैं। सत्य के प्रति जिज्ञासा, जीवन के प्रति अनुराग और विषय स्थितियों के प्रति गहरा रंग उनके काव्य को विशिष्ट गरिमा प्रदान करता है। युगीन परिवेश अपने सम्पूर्ण रूप में इनके काव्य में व्यक्त हुआ है। सच तो यह है कि इस देश के आम आदमी की धकड़न हमें इनके काव्य में सुनाई देती है। आज के युग में खोखले, ढोगलेपन को लेकर जी रहे स्वार्थी राजनेता और उनके झूठे वादों की वास्तविकता स्पष्ट इनके काव्य में दृष्टिगत होती है। समाज के यथार्थ को ही विवेचित करने का प्रयास सोनी जी ने किया है। वर्तमान जीवन में आई मूल्यहीनता जीवन की निरर्थकता अलगाव की भावना, कुंठा और संत्रास को भी बड़ी मार्मिका से व्यक्त किया है इनका समस्त काव्य मानव जीवन के आधुनिक परिवेश के विभिन्न सामाजिक संदर्भों के साथ व्यक्त हुआ है।

सोनी जी का काव्य संग्रह 'ठिठुरती धूप' जीवन के विविध रूपों और आयामों का वास्तविक रूप चित्रित करता है। इसमें एक ओर प्रणय की पवित्र भावना है, प्रकृति की सुन्दर छटाएँ हैं तो दूसरी ओर समसामायिक स्थितियों का यथार्थ चित्रण है। सामाजिक चेतना से परिपूर्ण इनके काव्य संग्रह 'ठिठुरती धूप' की कविताओं में राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक गतिविधियों के साथ-साथ दलित पीड़ित, समाज का यथार्थ चित्रण किया है। साथ ही प्रकृति परम्पराएँ, वैचरिकता, अर्थ व्यवस्था आदि विषयों को भी सजग रूप से अभिव्यक्ति दी है।

साहित्य और मनुष्य का गहरा सम्बन्ध है। काल एवं समय के अनुरूप साहित्य भी मानवीय जीवन के बदलते परिवेश को महत्व देता है। उसमें समसामयकि एवं युगीन जन-जीवन का चित्रण होता है। कविता में भी अतीत के और भविष्य के संदर्भ युग संदर्भ से जुड़कर आये हैं। युग के अनुरूप कविता की प्रवृत्तियों में भी परिवर्तन होता चला गया।

एक समय था जब कविता के दायरे को वीरता, भक्ति, श्रृंगार जैसे किसी एक शब्द के सहारे भी परिसीमित किया जा सकता था किन्तु आधुनिक काल में धीरे-धीरे खुलकर सामने आई कई काव्य प्रवृत्तियों ने कविता के दायरे का असीमित करना शुरू किया। इन धाराओं के मुख्य कवियों ने पैनी निगाह से अपने परिवेश को देखा तथा उसकी सटीक व्याख्या की। रामसेवक सोनी 'प्रकाश' इसी कोटि के कवि हैं। इनकी कविता में महानगरीय वातावरण, दलित व्यथा, समसामयिक, राष्ट्रीय राजनीतिक, अभ्युत्थान का सन्देश पुस्तक 'ठिठुरती धूप' में संग्रहित कई कविताआं के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

कविता, गीत, गीतकाएँ, नवगीत, दोहा और मुक्तक के मिश्रित काव्य संग्रह 'ठिठुरती धूप' में कुल मिलाकर 51 रचनाएँ हैं जो एक कवि की संचेतनाओं का वर्जन है, गर्जन है क्योंकि कवि ने जीवन के अनेक दुलर्भ चित्रों को अपनी लेखनी के माध्यम से इन रचनाओं में बखूबी से उकेर कर प्रेरणास्पद बना दिया। इस संग्रह की सभी रचनाएँ सामाजिक जनजीवन को दिशा और दृष्टि देने वाली है जिसमें समाज के हर वर्ग, बाल, युवा व वृद्ध की प्रत्येक घटनाओं को उजागर करने का प्रयास किया है।

वर्तमान में इस कलुसित वातावरण में जहाँ चारों ओर हताशपूर्ण वातावरण है, जहाँ हत्या, बलात्कार, लूट, आगजनी की घटनाएँ प्रतिदिन घटित हो रही है – वहीं कवि रामसेवक सोनी 'प्रकाश' अपने प्रथम गीत 'हम उदास न होंगे' के माध्यम से आशा और स्फूर्ति जाग्रत करते हुए कहते हैं –

'हम उदास न होंगे,
हम निराश न होंगे।
हर बाधा से टकरा लेंगे
हर कठिनाई को सह लेंगे।
संकल्प हमारा सत है।
मंजिल को पाही लेंगे।'

हमारे जीवन में कितनी ही बाधाऐं आयें कितनी भी कठिनाइयों का सामना करना पड़े हर परिस्थिति में हम ना ही उदास होंगे ना ही निराश होंगे। हमारा संकल्प है कि एक न एक दिन अपनी मंजिल को पा ही लेंगें।

किसी भी सत्य से उन्होंने मुकाबला किया है। जन-जीवन से समाज की कुरीतियों से उनका सीधा संपर्क है। नारी अभ्युदय के लिये वे बैचेन हो उठते हैं। बेटा-बेटी के भेद को मिटाकर कन्या भ्रुण हत्या पर रोक लगाकर कर समाज के स्वस्थ्य पहलुओं को अपने काव्य का विषय बनाया है, उदाहरणार्थ

बेटी से घृणा मत करो,
घर की रौनक होती हैं बेटियाँ।

कभी सीता कभी राधा कभी दुर्गा,
अवतार लेकर होती हैं बेटियाँ ।

एक तरफा जहाँ सामाजिक विषमता पर दृष्टि डाली है तो दूसरी ओर 'ओला वृष्टि' शीर्षक में कृषक की व्यथा कथा में कवि मन आहत हुआ है। ओला वृष्टि से बर्बाद फसल आज का कल पर कोई भरोसा नहीं । किसान कल के लिये बीज बोता है, सपने संजोता है पर कल क्या हाथ आयेगा, यह निम्न पंक्तियों से भाषित होता है –

लहलहाते खेत मुस्कान से
चना, मसूर या गेहूँ की डाली
तड़तड़ाते रात के हिमपात ने
गेहूँ मिट्टी में मिलाया,
चने की है डाल खाली
अन्न खाने को उगाया
पर खा नहीं पाया

आगे उन्होंने भारतीय संस्कृति को अक्षुण्य बनाये रखा, संत तुलसी को 'रत्ना के वरदान तुम्हें कोटि कोटि प्रणाम' कहकर सम्पूर्ण श्रद्धा के साथ तुलसी के चरणों में शीश झुकाया है । तुलसी ने इस संसार को 'रामचरित मानस' देकर मानवता का अमर संदेश दिया है। श्री प्रकाश जी ने अपनी माटी को भी प्रणाम किया है । यहाँ देशभक्ति से कवि मन अविभूत है । वे अपने को प्रकृति से भी जोड़कर रखते हैं क्योंकि प्रकृति मानव की सहचरी है। बादल अभिमानी कविता छायावादी कवियों से आत्मसात करती है । 'गीत पूनम', 'होली' शीर्षक कविता में भारतीय संस्कृति की स्पष्ट झलक मिलती है । भारत तीज त्यौहारों के माहात्म्य को स्वीकारता है । इसी का उदाहरण उनकी निम्न कविता है –

हिंसा की होली को
छोड़ो रे हो जाये
देश भी निहाल

'श्रावण का आनन्द' में उन्होंने अपने अंचल के परिवेश को समेट कर पूरा दृश्यःसाकार किया है –

लहराती चुनरी उड़े झूले के आनन्द
भैंरा चकरी बाँसुरी, श्रावण का आनन्द

भारत गाँवों का देश है गाँवों का विकास ही देश का विकास है वे चिंतित हैं–

कैसे पहुँचेगी रोशनी यहाँ
सोचना है शहरों के वास्ते
बढ़ता हो देश जब आगे आगे
विकास आये जब गाँवों के रास्ते

कवि ने तारसप्तक के कवि गिरिजाकुमार माथुर के प्रति भाव व्यक्त कर यह प्रमाणित किया है कि वे नयी कविता की विकास यात्रा में शामिल हुये हैं । नये । कवियों के सानिध्य में काव्य पाठ करने का सुअवसर उन्हें प्राप्त हुआ हर पहलू पर सोचा है और लिखा है । एक ओर जहाँ संस्कृति है वहीं दूसरी ओर धर्म पर भी आस्था व्यक्त की है । महाकाल का स्मरण वे इस प्रकार करते हैं– 'महाकाल की नगरी में भैरव का पहरा रहता है' यह है उनकी धार्मिक आस्था आगे राष्ट्र धर्म का निर्वाह भी उन्होंने किया है । देश के हालातों से वे क्षुब्ध हो उठते हैं। यथा प्रश्न की चार पंक्तियाँ –

तार यूरिया चारा खा जाते हैं।
पद प्रतिष्ठा पा जनता को भरमाते हैं
आदर्शों के विपरीत आचरण देखा है

एक ओर भ्रष्टाचार है तो दूसरी ओर दलितों के प्रति छुआछूत और भेदभाव की नीति यहाँ वे गाँधीवादी विचार धारा का अमल करते हैं –

उनका दु:ख अपना बन जाये
अपना सुख उनको भी दे दें
छुआछूत का भेद मिटाकर
गले लगा लें मन से झेलें

राष्ट्रीय चेतना उनके काव्य में सर्वत्र देखने को मिलती है । अमर बलिदानी कारगिल के सपूतों के बलिदान के प्रति कवि के कष्क भरे मन ने श्रद्धांजलि देकर उनका जय घोष किया है । अपने काव्य संग्रह में गजल लिखकर हिन्दी की गजल परंपरा को समृद्ध किया है। बुंदेली भाषा पर अपना अधिकार जताते हुये 'बोली चिरैया' कविता में संसार की स्वार्थपरता पर इंगित किया है।

साँझ भई खेतन से घर को लौट रहे
गीतों में गा रहे कोऊ-काऊ की नईयाँ रे
बोली चिरैया रे

उपसंहार – समग्रत: श्री सोनी जी 'प्रकाश' का साहित्य लेखन यह सिद्ध करता है कि वे निष्ठावान कर्म साधक राष्ट्रीयता एवं मानवता के पुजारी, दलित वर्ग के सजग प्रहरी, बाल मन को पढ़ने वाले मनोविज्ञानी अंधेरी रात में मशाल जलाकर सत्साहित्य के रचयिता हैं । उनके काव्य कृतित्व से हिन्दी साहित्य को कोष समृद्ध हुआ है । अपने व्यक्तित्व कृतित्व के बलबूते पर उन्हें अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यश एवं सम्मान प्राप्त । उनके भीतर जो साहित्य की गहराई है वह विलक्षण है । उनके इन विचारों हुआ है को उनके निकट बैठकर समझने की आवश्यकता है । वे कालजयी साहित्यकार बनकर जीवन मूल्यों का सृजन करने में सफल रहे हैं।

रामसेवक सोनी 'प्रकाश' हिन्दी के उन कवियों में हैं जिन्होंने अपनी काव्य यात्रा का एक लम्बा सफर तय किया है। इस काव्य यात्रा में सुमन जी ने समय, परिस्थिति और वातावरण के अनुरूप उन बदलावों को अपनी आँखों से देखा है जिनके कारण आधुनिक हिन्दी कविता में अनेक नवीन मोड़ और परिवर्तन आए हैं। सोनी जी का समस्त काव्य उनके गहन चिंतन और विचारधारा की खुली किताब है। सोनी जी के काव्य का अनुशीलन करने से यह स्पष्ट होता है कि उनके काव्य के अनेक पड़ाव हैं जिन पर यह कवित कुछ समय के लिए ठहरता है और फिर आगे बढ़ जाता है। 'ठिठुरती धूप' काव्य संग्र में प्रेम भावना से परिपूर्ण कविता लिखने वाले इस कवि ने इस देश के सामाजिक जीवन की विसंगतियों और असंगतियों को न केवल निकट से देखा है बल्कि उसे परखा भी है। यही कारण है कि आम आदमी के जीवन की विषम आर्थिक स्थितियों का चित्रण इनकी कविताओं में हुआ है।

इनकी 'ठिठुरती धूप' काव्य संग्रह ही कविताओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि इस कवि ने अपने व्यक्तिगत हितों की अपेक्षा कर सामाजिक हितों को अधिक महत्व दिया है। सोनी जी ने अपनी कविताओं में अनेक स्थलों पर देश भक्ति और राष्ट्र प्रेम से परिपूर्ण काव्य का सृजन किया है।

मानवीय जीवन में संस्कृति और सांस्कृतिक परम्पराओं का अपना महत्व है। संस्कृति अपने आप में इतनी व्यापक है कि जीवन के सभी रूप उसमें समाये हुए हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से सुमन जी का काव्य इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इनके काव्य में हमारे दैनिक व्यवहार, मनोरंजन, आनंद और कला में पाए जाने वाले विचारों की प्रवृत्ति का प्रकाशन हुआ है। कवि

सुमन जी का काव्य का विवेचन करने से स्पष्ट होता है कि भारतीय संस्कृति का मार्मिक रूप उनके अनेक कविताओं में व्यक्त हुआ है।

सोनी जी ने काव्य की प्रेरणा प्रकृति से ही ग्रहण की है। वे मानकर चलते कि हैं जिस तरह तुलसीदास जी को रत्ना के वचनों विरह की पीड़ा असहाय हुई थी उसी तरह प्रत्येक मनुष्य को आज भी विरह और वेदना की पीड़ा असहाय हो जाती है।

आज मनुष्य ने जितनी भी प्रगति की है उसमे प्रकृति ने भी मनुष्य का साथ दिया है।

रामसेवक सोनी 'प्रकाश' जी ने 'ठिठुरती धूप' काव्य संग्रह की कविताओं में पौराणिक और ऐतिहासिक संदर्भ का भी उल्लेख किया है। इन्होंने पुरानी रूढ़ियों को तो त्यागा ही है पर यही उसमें उन्हें कहीं चेतना दिखाई देती है तो भी इनकी कविताओं में यत्र-तत्र हुआ है।

कवि सोनी जी मेहनत मजदूरी कर अपना जीवन व्यतीत करने वाली परिश्रमी नारी के प्रति भी अतिसंवेदनशील होकर नारी का चित्रण करते हैं। इनकी कविताओं नारी विषयक दृष्टि भी व्यक्त हुई है।

कवि ने जिस प्रकार अपनी कविताओं में गाँव के विकास पर दृष्टि डाली है ऐसा लगता है कि वे गाँधी जी से प्रेरित थे। क्योंकि गाँधी जी ने कहा है कि जब तक इस देश में हर गाँव में विकास की प्रक्रिया नहीं होगी तब तक देश नहीं सुधर पायेगा।

सोनी जी की काव्य यात्रा प्रारम्भ से लेकर अंत तक कभी भी एक सी नहीं रही। इनके काव्य में एक गति है, पढ़ाव है, तो साथ ही साथ उनकी हर कविता संग्रह एक नये की शुरूआत है। इनकी कविताएँ इस बात का संकेत देती हैं कविता न तो मात्र नारा है, और नही अतिरंजित भावों का कल्पना विकास।

इस प्रकार कवि सोनी जी ने काव्य संग्रह 'ठिठुरती धूप' की कविताओं में विविध सन्दर्भ प्रस्तुत किये हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन' के काव्य में सामाजिक चेतना, डॉ. रज़िया शेख, विनय प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण, 2013
2. 'ठिठुरती धूप' डॉ. रामसेवक सोनी 'प्रकाश' लोक वाणी संस्थान, दिल्ली, प्रथम संस्करण
3. अपनी माटी - साहित्य और समाज का दस्तावेजीकरण, मासिक ई-पत्रिका, अप्रैल 2025
4. शब्द ब्रह्म - भारतीय भाषाओं की अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका, जनवरी 2002
5. श्री सोनी जी 'प्रकाश' की काव्य साधना समीक्षा-डॉ. रूकमणी तिवारी, प्रो. अध्यक्ष (हिन्दी विभाग), माधव महाविद्यालय, ग्वलियर (म.प्र.)
6. इन्टरनेट

****